ईशावास्योपनिषद्

[अन्वय, संस्कृतव्याख्या, संस्कृतभावार्थ, हिन्दी तथा अंग्रेजी अनुवाद, शांकरभाष्य और समास, व्युत्पत्ति आदि व्याकरणात्मक विस्तृत टिप्पणी से संवलित]

सम्पादक

तारिणीश झा

व्याकरणवेदान्ताचार्य

東京外国語大学
177156
49. 3. 30
図書館蔵書

प्रकाशक

रामनारायणलाल बेनीमाधव

प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेता

२, कटरा रोड, इलाहाबाद–२

द्वितीय संस्करण] १९७१ [मूल्य ७५ पैसे

प्रकाशक
रामनारायणलाल बेनीमाधव
प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता
इलाहाबाद

द्वितीय संस्करण
२ जनवरी, १९७१

मुद्रक
विजय कुमार अग्रवाल
नव साहित्य प्रेस
इलाहाबाद

विषय-सूची

(क) भूमिका-भाग

विषय			पृष्ठ
१.	उपनिषद् साहित्य	...	१
२.	रचनाकाल	...	१
३.	उपनिषद् का शब्दार्थ	...	२
४.	उपनिषदों का महत्त्व	...	२
५.	उपनिषदों का विषय	...	६
६.	उपनिषदों की संख्या	...	७
७.	ईशोपनिषद् का परिचय	...	८
८.	ईशोपनिषद् का विषय	...	८
९.	ईशोपनिषद् में ज्ञानयोग और कर्मयोग	...	१०
१०.	इस सूक्त का देवता	...	१३
११.	अनेक नामों से एक तत्त्व का वर्णन	...	१५

(ख) ग्रन्थ-भाग

१.	शान्ति-मन्त्र	...	१
२.	सर्वत्र भगवद्दृष्टि का उपदेश	...	३
३.	चितशुद्धि के लिए विहित कर्मानुष्ठान की आवश्यकता	...	५
४.	अविवेकी या अज्ञानी की निन्दा	...	८
५.	ब्रह्म का स्वरूप-वर्णन	...	११
६.	ब्रह्म-स्वरूप का प्रकारान्तर से वर्णन	...	१४
७.	ब्रह्म के जानने वाले अभेददर्शी की स्थिति का वर्णन	...	१५
८.	उक्त भाव का ही प्रकारान्तर से वर्णन	...	१७
९.	आत्म-निरूपण	...	१९
१०.	कर्म और उपासना का समुच्चय	...	२२

११. कर्म और उपासना के समुच्चय का फल ...
१२. ज्ञान और कर्म के तत्त्व को समझने का फल ...
१३. व्यक्त और अव्यक्त उपासना का समुच्चय ...
१४. व्यक्त और अव्यक्त उपासना के फल ...
१५. दोनों उपासना के फल का स्पष्टीकरण ...
१६. उपासक की आदित्य से याचना ...
१७. उपासक की पुनः याचना ...
१८. मरणोन्मुख उपासक की प्रार्थना ...
१९. उपासक की अग्निप्रतीक भगवान् से मोक्ष की याचना ...
२०. श्लोकानुक्रमणिका ...

भूमिका

१. उपनिषद् साहित्य

आर्य लोग भारतवर्ष में ऐतिहासिक काल के पूर्व आये। भारत में आने पर उनको यहाँ के स्वस्थ जलवायु ने प्रभावित किया और वे ध्यान में संलग्न हो गये। उन लोगों ने अनेक देवताओं की स्तुति में मंत्रों की रचना की और यज्ञ और जप का कार्य करना प्रारम्भ किया। फिर क्रमशः उनकी यह विचार-धारा हुई कि एक ब्रह्म से अनेक हो गये। "**एकं वा इदम् विबभूव सर्वम्**" "**एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति**" आदि। इस प्रकार ई० से ४,००० वर्ष पहले वैदिक साहित्य की रचना हुई। वेदों में कर्मकाण्ड की बात आती है। वे अधिक प्रवृत्ति-प्रधान हैं। उनमें निवृत्ति मार्ग की कमी है। यज्ञों की प्रधानता उनमें अधिक है। ब्रह्मविद्या को लोग उस समय भूल-से गये।

विषय की दृष्टि से वेदों के तीन भाग हैं जो काण्ड कहलाते हैं—**कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड** और **ज्ञानकाण्ड**। विश्व के मूल तत्त्व का विचार ज्ञानकाण्ड में किया गया है। कर्म और उपासना उस तत्त्व को उपलब्ध करने की योग्यता प्रदान करती हैं, इसलिए वे साधन स्वरूप हैं और ज्ञान सिद्धान्त है। वेद के ज्ञानकाण्ड का ही नाम उपनिषद् है। इन्हें वेदान्त या आम्नायमस्तक कहकर भी पुकारा जाता है। अतः यह निर्विवाद है कि ब्रह्मविद्या के आदि स्रोत उपनिषद् ही हैं।

२. रचनाकाल

यह समझा जाता है कि उपनिषदों की रचना १,८०० से लेकर ९०० ई० पू० हुई है। इसका काल और संकुचित करने के लिये यह कहा जाता है कि १,३०० और ९०० ई० पू० के बीच इनकी रचना हुई और उस समय ब्राह्मण साहित्य की अवनति होने लगी। ब्राह्मण साहित्य का विकास होकर उनसे सम्बद्ध आरण्यक और उपनिषद् साहित्य की रचना हुई। इस प्रकार ऐतरेय ब्राह्मण से सम्बद्ध ऐतरेय आरण्यक है और इसी का भाग ऐतरेय उपनिषद् है। इसी प्रकार कौषीतकि, तैत्तिरीय आदि ब्राह्मणों के भी इन्हीं नामों से प्रख्यात आरण्यक और